

वीर संवत् २४८२, मछा वढ ७, शनिवार  
ता. १२-२-१८६६, गाथा ३, ४ प्रवचन नं०-२४

‘दौलतरामञ्ज’ कृत ‘७ ढावा’ है. पंडित हुअे हैं, द्विगं०र पंडित. करी० २०० वर्ष पढले (हुअे हैं). उन्हींने शास्त्रमें से संक्षिप्त में सार-सार न्याय निकालकर ‘७ ढावा’ बनाई है. यौथी ढाल चलती है, सम्यग्ज्ञान की चलती है. दे० ! उन्हींने शास्त्रमें से निकाला है, अपने घर का कुछ नहीं है. जो संतों ने, मुनिओं ने, ज्ञानिओं ने जो बात शास्त्र में विस्तार से कही है, उसे संक्षेप में लिखा है. उसे जैसे कछने में आता है कि, गागर में सागर भर दिया. बहुत संक्षेप में बात है, लेकिन उसमें सार है. दे० ! क्या कछते हैं ? अपने यहाँ तक आया है.

सम्यग्दर्शन बिना ज्ञान होता नहीं और चरित्र होता नहीं, वढ बात पढले आ गई है. तीसरी ढाल में आया ना ? तीसरी (ढाल). ‘या बिना ज्ञान चरित्रा.’

भोक्षमडल की परथम सीढी, या बिना ज्ञान चरित्रा;  
सम्यक्ता न लहें, सो दर्शन, धारो लव्य पवित्रा.

तीसरी ढाल की १७ वां श्लोक है. समज में आया ? यढ यीज क्या है, अनंतकाल में समज में आया नहीं. सम्यग्दर्शन बिना सम्यग्ज्ञान नहीं होता और सम्यग्ज्ञान बिना व्रत और तप सख्या होता नहीं. पुण्य बंध जाये, राग मंद डो (तो) पुण्य बंध जाये. उससे स्वर्गादि (मिले), पैसा मिले. आत्मज्ञान बिना जन्म-मरण का अंत नहीं आता. वढ आगे कछेंगे. समज में आया ? यढ आत्मज्ञान सम्यग्दर्शन बिना होता नहीं. यढ बात पढली (है). सम्यग्दर्शन-ज्ञान बिना, सम्यग्दर्शन बिना सम्यग्ज्ञान और चरित्र को सम्यक्ता लागू होती ही नहीं. यढ पढले कछ गये हैं. सम्यग्दर्शन क्या यीज है, वढ बात कछ गये हैं.

अपना आत्मा परद्रव्य से भिन्न आत्मरुचि लली है. आया है कि नहीं ? थोडी बात कंठस्थ है, थोडी बात है, पूरी नहीं है. (हमारे ँस भाई को) सारा

कंठस्थ है. अपने प्रभु है ना ? (उनको) सारा कंठस्थ, सारा कंठस्थ (है). समज में आया ? पड़ले आ गया है. आत्मद्रव्य परद्रव्य से भिन्न (है) यह पड़ले आ गया है. भगवान् आत्मा...! आत्मा यानी क्या ? उसमें अनंत ज्ञान, अनंत शान्ति, अनंत आनंद अंतर में पडा है. जैसे आत्मा की परपदार्थ से भिन्न (रुचि). शरीर से, कर्म से, पुण्य-पाप के भाव होते हैं वे विकार, आस्रव हैं उनसे भी भिन्न. अपना शुद्ध स्वरूप, उसका अंतर में सम्यग्ज्ञानपूर्वक अंतरदृष्टि होना. ज्ञानपूर्वक का अर्थ क्या ? अनुभवपूर्वक. अंदर यह आत्मा ऐसा है. शुद्ध चिदानंद स्वरूप (है), जैसे भानपूर्वक प्रतीति होनी उसका नाम सम्यग्दर्शन (है). अनंतकाल में नहीं प्रगट की ऐसी चीज है. समज में आया ? ऐसा सम्यग्दर्शन हो तो भी ज्ञान की आराधना भिन्न करनी चाडिये, यह बात चलती है.

सम्यग्दर्शन हो तो भी सम्यग्ज्ञान (की) निर्मलता विशेष करने के लिये शास्त्र का, तत्त्व का अभ्यास करना चाडिये. ज्ञान तो आत्मा का है. लेकिन उस ज्ञान में निर्मलता लाने को सम्यग्दर्शन होने के बाद चारित्र और व्रत लेने से पड़ले, जैसे सम्यग्ज्ञान का विशेष आराधन, सेवन करना चाडिये. क्योंकि सम्यग्दर्शन बिना ज्ञान होता नहीं और ज्ञान आया तो ज्ञान की आराधना विशेष करना.

अब, यहां कड़ते हैं, हेजो ! सम्यग्दर्शन को कारण कडा है, सम्यग्ज्ञान को कार्य. कड़ते हैं कि, 'सम्यग्दर्शन निमित्तकारण है...' दूसरा पेरेंग्राह है. 'तथा सम्यग्दर्शन निमित्तकारण है...' यह बात थोड़ी सूक्ष्म है. आत्मा अंतर में पुण्य-पाप के भाव से भिन्न, शरीर से भिन्न, आत्मा आनंदस्वरूप है ऐसी अंतर में प्रतीति-सम्यग्दर्शन का होना यह कारण है और साथ में सम्यग्ज्ञान होना यह कार्य है. दोनों है तो पर्याय. आत्मा की सम्यग्दर्शन - धर्म की पड़ली पर्याय हो यह है तो पर्याय और साथ में ज्ञान उत्पन्न होता है वह भी है तो पर्याय, लेकिन जैसे दीपक पड़ले होता है तो दीपक के पीछे प्रकाश-उसका कार्य उत्पन्न (होता है). जैसे उत्पन्न तो साथ में होता है, परंतु दीपक को कारण कड़ते हैं और उजाला को कार्य कड़ते हैं. जैसे भगवान् आत्मा अपने शुद्ध स्वरूप की अनुभव में प्रतीत करने के साथ ज्ञान उत्पन्न होता है, परंतु उस ज्ञान को कार्य कड़ते हैं और दर्शन को कारण

कहते हैं.

भुमुक्षु :- ज्ञान साध्य...

उत्तर :- साध्य-साधन का यहाँ काम नहीं है. यहाँ तो कारण की बात है.

‘सम्यग्दर्शन निमित्तकारण है...’ इस पर वजन है. सुनो ! आत्मा में... पर्याय तो आत्मा की दोनों हैं, एक पर्याय को कारण कहा और दूसरी पर्याय को कार्य कहा. क्यों कहा उसका स्पष्टीकरण चलता है. बहुत सूक्ष्म (है). अनंतकाल में अनंत भव हुआ, नरक के अनंत, पशु के अनंत, मनुष्य में भी अबजोपति अनंत बार हुआ और बिजारी भी अनंत बार हुआ, वह कोई नयी चीज नहीं है. और स्वर्ग में भी अनंत बार उत्पन्न हुआ, नौवीं त्रैवेयक भी अनंत बार सम्यग्दर्शन प्राप्त की. यह बाद में आयेगा. ‘कोटि जन्म तप तपै’ परंतु आत्मज्ञान बिना जन्म-मरण का नाश होता नहीं.

कहते हैं कि, पहले सम्यग्दर्शन को निमित्तकारण कहा. क्यों ? कि, वह है तो अपनी पर्याय और ज्ञान भी अपनी पर्याय है, तो पर्याय-पर्याय में कारण-कार्य कहना, सम्यग्दर्शन की पर्याय निमित्तकारण है, ज्ञान की पर्याय नैमित्तिक कार्य है. क्या कहा, समज में आया ? भगवान् आत्मा शुद्ध चिदानंद का सम्यग्दर्शन गृहस्थाश्रम में भी होता है. राजपाट छो, ‘भरत’ यकवर्ती को ८६ हजार स्त्री और ८६ कोड पायदल. वह हमारी चीज नहीं, हमारी चीज तो अंतर में है. उसमें अनंत आनंद और अनंत ज्ञान भरा है. ऐसा अंतर में अनुभव में प्रतीत हुई, तो कहते हैं कि, वह प्रतीति है तो आत्मा की पर्याय. पर्याय समजते हो ? पर्याय सुनी न हो. अवस्था. आत्मा त्रिकाणी वस्तु है. ज्ञान, आनंद आदि त्रिकाली गुण हैं और यह सम्यग्दर्शन उसकी वर्तमान हालत-पर्याय है. क्यों, बराबर है ? युवान के पास तो हां कहलावे. और क्या करें ? कैसे है ?

भगवान् आत्मा...! यह (शरीर) तो रजकण जड मिट्टी है. अंदर शुभ-अशुभभाव भाव होता है वह तो विकार बंध कारण है. उससे भिन्न भगवान् आत्मा का अंतर में अनुभव करके सम्यग्दर्शन करना. वह सम्यग्दर्शन है तो आत्मा की अवस्था.

अवस्था (यानी) पर्याय, कार्य, दशा. परंतु सम्यग्दर्शन की पर्याय को कारण कडा. तो क्या कारण ? उपादान कारण है ? उपादानकारण क्या ? उपादानकारण तो आत्मद्रव्य है. उसमें से सम्यग्दर्शन पर्याय उत्पन्न होती है. और सम्यग्ज्ञान की पर्याय भी आत्मद्रव्य की उपादान-मूल कारण से पर्याय उत्पन्न (होती है). आत्मद्रव्यमें से सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान (की) पर्याय आती हैं. समज में आया?

ये सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान धर्म की दशा रागमें से, कर्ममें से, शरीरमें से, परमें से नहीं आती है. सम्यग्दर्शन पर्याय और सम्यग्ज्ञान दशा आत्मा वस्तु है उसमें से आती है. जिसमें पानी भरा है उसमें से प्रवाह आता है. प्रवाह. भगवान् आत्मा में अनंत ज्ञान, अनंत श्रद्धा की शक्ति आदि पडी है. समज में आया ? उसमें से सम्यग्दर्शन की (पर्याय उत्पन्न आती है). सम्यग्दर्शन का उपादानकारण द्रव्य है. उपादान समजे ? मूल कारण. और सम्यग्ज्ञान जो उत्पन्न हुआ, आत्मा क्या ? आत्मा ज्ञानमय, अनंत आनंदमय शुद्ध (है), औसा भान (हुआ वड) सम्यग्ज्ञान, इस सम्यग्ज्ञान का उपादानकारण तो आत्मा का ज्ञानगुण है, आत्मा है. दोनों अके ही बात है. उसमें से सम्यग्ज्ञान की पर्याय आती है. सम्यग्ज्ञान की पर्याय रागमें से नहीं आती, पूर्व की पर्यायमें से नहीं आती. क्या पूर्व पर्याय... इसमें कितना समजना ? समज में आया ? संसार में पाप के लिये कितना समजता है ? पाप है ? क्या है उसमें ? पाप है ? ये सब मकान बनाना, दो-पांच करोड कमाना अकेला पाप है.

मुमुक्षु :- सुभ है.

उत्तर :- दुःख है, धूल में सुभ है ? उसे पैसेवाले को सुभी मानना है. समज में आया ? दुःख है, बिलकुल दुःख है. परपदार्थ की भमता-यह मेरा, मैं उसका यह मिथ्यात्वभाव है. साथ में राग और आकुलता होती है वह दुःख है. क्या करे ? अनंतकाल में अपनी यीज में आनंद है (उसे जाना नहीं). आगे कहेंगे. 'ज्ञान समान व आन जगत में' यह आता है. दूसरे में सुभ नहीं है. समज में आया ? यौथी गाथा में आयेगा. 'ज्ञान समान व आन जगत में सुभको कारन,' यौथी गाथा है ना ? भाई ! यौथी (गाथा है). इसमें ८८ (पन्ना) है. अपने दूसरी (गाथा)

ચલતી હૈ. સમજ મેં આતા હૈ ? ચૌથી મેં હૈ.

જ્ઞાન સમાન વ આન જગત મેં સુખકો કારન,  
ઇહિ પરમામૃત જન્મજરામૃતિ રોગ નિવારન.

સમજ મેં આયા ? દુનિયા મેં પૈસે મેં-ધૂલ મેં કોઈ સુખ નહીં હૈ, ઐસા કહતે હૈં.

મુમુક્ષુ :- કબ ?

ઉત્તર :- અભી. કબ કયા ?

‘જ્ઞાન સમાન વ આન જગત મેં સુખકો કારન,’ યહ જ્ઞાન કૌન ? આત્મા કા જ્ઞાન. આત્મા શુદ્ધ આનંદસ્વરૂપ હૈ, ઉસકા જ્ઞાન, ઇસકે સમાન જગત મેં સુખ કા કારણ ઔર કોઈ નહીં. કયા આયા ? પુણ્યભાવ ઉત્પન્ન હોતા હૈ વહ ભી સુખ કા કારણ નહીં, ઐસા બતાતે હૈં. સમજ મેં આયા ? આહા..હા..! યહ તો સાદી ભાષા મેં હિન્દી મેં ‘દૌલતરામજી’ ને ‘છ ઢાલા’ બનાઈ. ઉસકા ભી અભ્યાસ નહીં, વિચાર નહીં, મનન નહીં ઔર આત્મા કો કલ્યાણ હો જાયે, કહાં સે કલ્યાણ હોગા ? સત્ય કા ભાન બિના ઔર સત્ય કી પીછાન બિના કભી કલ્યાણ હોતા નહીં.

કહતે હૈં કિ, આત્મા મેં જો શુદ્ધ સ્વભાવ કી શ્રદ્ધા હુઈ વહ સમ્યગ્દર્શન (હૈ). ઉસે નિમિત્તકારણ કહા. ક્યોંકિ પર્યાય હૈ. ઔર જ્ઞાન જો પ્રગટ હુઆ વહ ભી હૈ તો આત્મા કી અવસ્થા, પરંતુ (શ્રદ્ધા કી પર્યાય કો) નિમિત્ત (કહા) તો (જ્ઞાન કી પર્યાય કો) નૈમિત્તિક (કહા). સમજ મેં આયા ? કાર્ય કો નૈમિત્તિક (કહા), કારણ કો નિમિત્ત (કહા). ક્યોંકિ ઉપાદાનકારણ તો હૈ નહીં. દર્શનપર્યાયમેં સે જ્ઞાનપર્યાય આતી હૈ, ઐસા હૈ નહીં. ભગવાનઆત્મા મેં અંદર શ્રદ્ધાગુણ ત્રિકાલ પડા હૈ ઉસમેં સે શ્રદ્ધાપર્યાય અંતરદષ્ટિ કરને સે આતી હૈ ઔર જ્ઞાનપર્યાય અંદર જ્ઞાનગુણમેં સે સમ્યગ્જ્ઞાન પર્યાય આતી હૈ. યહાં જ્ઞાન કા મૂલ કારણ સમ્યગ્દર્શન નહીં હૈ. જ્ઞાન કા મૂલ કારણ તો આત્મદ્રવ્ય હૈ, પરંતુ સમ્યગ્દર્શન કો કારણ કહા વહ નિમિત્તકારણ હૈ. નિમિત્તકારણ (અર્થાત્) સહચર-સાથ મેં હૈ. નિમિત્તકારણ સમ્યગ્દર્શન ઔર સમ્યગ્જ્ઞાન ઉસકા નૈમિત્તિક કાર્ય. હૈ તો દોનોં પર્યાય, દો હાલત, દો દશા. ભાઈ ! કયા કરના ? ભાષા કોઈ ભી હો લેકિન ભાવ તો જો હૈ વહી આયે ના. ભાવ કયા ઉસમેં દૂસરા આતા હૈ ?

डुडुषुतु :- ... जे डरुडरुडडलं थलड ते उडलदलनने ?

उतुतर :- उडलदलन कुी अनंतुी डरुडरुड (डुै), उसडुें से अेक डरुडरुड कुी नुडडुतुत और दूसरुे कुी नुैडुडुतुतु, अुैसल कुडने डुें आतुल डुै. आडल..डल...!

डुडुषुतु :- डलतुर कुडने के डुडुे डुै ?

उतुतर :- नडुी, अुैसल डुै. डलतुर कुडने के डुडुे नडुी डुै. कुीरु गुण कुी डरुडरुड अनुड कुीरु गुण कुल उडलदलन नडुी डुै, वड डलत डतलनुी डुै. कुडल (कुडल) ? आतुडल वसुतु डुै उसडुें अनंत गुण डडे डुें. उसकुल डलन डुेकर दरुशन-डुलन डुडुआ तुी अेक डरुडरुड कुल दूसरुी डरुडरुड डुूल कुलरुण नडुी. अुैसे अेक गुण कुल दूसरुल गुण डुूल कुलरुण नडुी. डुूल कुलरुण नडुी डुै और उसुे कुलरुण कुडनुल, वड तुी नुडडुतुतुकलरुण (डुे गडल). जुरुसे आतुडल कुल सुडुन डलडुडुे उसुे सडुननल डडेगल. डलर गतुतु डुें रडुडनुल डुे (तुी) रडुडते तुी डुें, उसडुें नडुी कुडल डुीज डुै ? डुीरलसुी के अवतलर डुें अनलदुडु से रडुडतुल डुै. नरकु, नुगुेद, सुवर्ग, सेडलरुड सडु रडुडने कुल डुंध, डरुडडडडल कुल (कुलरुण) डुै. उसडुें कुीरु आतुडल धरुड नडुी डुै. आडल..डल...!

कुडते डुें, 'सडुडुगदरुशन नुडडुतुतुकलरुण डुै...' कुडुी ? कुडुी, आतुडल कुी सडुडुगदरुशन और सडुडुगडुलन दुी दशल डुें. दुी दशल कुल डुूल कुलरुण तुी आतुडल डुै. अेक डरुडरुड कुी कुलरुण कुडल और दूसरुी डरुडरुड कुी कुलरुड कुडल, वड नुडडुतुतुकलरुण और नुडडुतुतुकलरुड कुी अडुेकुल से कुडल डुै. 'डुस डुरकुलर डुन दुीनुी डुें कुलरुण-कुलरुडडलव से डुी अनुतर डुै.' दरुशन डुै वड शुरदुडल से डुी डुरलडुतु डुेतल डुै और डुलन डुलनगुण से डुरलडुतु डुेतल डुै. सडुडुगडुलन दरुशनडरुडरुड से उतुडनुन डुेतल डुै, अुैसल नडुी. आडल..डल...!

वुैसे डुी सडुडुडुडलरुतुर डुी दरुशन डुै, डुलन डुै उसडुें से उतुडनुन नडुी डुेतल. सडुडुडुडलरुतुर वुीतरलग दशल, आतुडल अंतुर डुें अेकलडु डुेकर अंतुर आतुडल डुें वुीतरलगतल नलड कुल डलरुतुरगुण डडल डुै, उसडुें अेकलडु डुेकर वुीतरलग डरुडरुड कुल उडलदलनकुलरुण आतुडल डुै. डरुंतु डलरुतुर कुी कुलरुड कुडते डुें और सडुडुगदरुशन-डुलन कुी कुलरुण कुडते डुें. डडु आडल डुै, आडल डुै कुडुी डरु ? कुडलं ? नडुी, डुडलल नडुी डुै. 'सडुडुसलर' डुें डुंधकुलरुण, 'डुंध अडुडलर' डुें आडल डुै. 'सडुडुसलर' डुें 'डुंध अडुडलर'.

सम्यग्दर्शन-ज्ञान कारण और सम्यक्चारित्र्य कार्य. समज में आया ? यहाँ तो अपने दर्शन और ज्ञान के साथ बात लेनी है. समज में आया ? बंध.. बंध (अधिकार) ना ? 'अज्ञानी और मिथ्यादृष्टि ही है क्योंकि (वह) निश्चयचारित्र्य के कारणरूप ज्ञान-श्रद्धा से शून्य है.' २७३ गाथा है. 'समयसार' 'बंध अधिकार' की २७३ (गाथा है). क्या कहते हैं उसमें ?

शील पालता है, तप करता है, गुप्ति पालता है, समिति पालता है और मछाव्रत पालता है, फिर भी सम्यग्दर्शन-ज्ञान के कारण बिना चारित्र्यपना उसे होता नहीं. २७३ गाथा है. मिथ्यादृष्टि अज्ञानी दृष्टि में मिथ्यात्व है, आत्मा की श्रद्धा नहीं. और अज्ञान है—आत्मा का ज्ञान नहीं है तो उसके जो पंच मछाव्रतादि परिणाम हैं वे ज्ञान-श्रद्धा से शून्य हैं. निश्चयचारित्र्य का कारण सम्यग्दर्शन-ज्ञान. निश्चय स्वरूप की रमणता, आनंद की रमणता—चारित्र्य का कारण सम्यग्दर्शन-ज्ञान (है). यह कारण नहीं है तो सब शून्य है. यहाँ सम्यक्चारित्र्य का कारण सम्यग्दर्शन-ज्ञान को कडा. यहाँ सम्यग्ज्ञान का कारण सम्यग्दर्शन कडा. आडा..डा...! समज में आता है ? यहाँ तो बहुत बार आ गया है, यौदह बार प्रवचन हो चुके हैं. यह 'समयसार' तो सभा में (यौदह बार) पढा है. यहाँ बहुत बार पढा है इसलिये बहुत लोगों को याद है, औसा कहने का आशय है. समज में आया ? यौदहवीं बार पढते हैं. यहाँ (अक मुमुक्षु) थे ना ? 'जयपुर'वाले हैं ना ? आसो वद १०, (संवत्) २०१८ की साल. आभीर में यौदहवीं बार शुरू किया था. यहाँ मकान का वास्तु था ना ? २०१८ की साल, आसो वद. उमारी, आप की कार्तिक वदी कहते हैं. दसमी के दिन यौदहवीं बार शुरू किया था. (अक मुमुक्षुने) उसमें यौदह उज्जर दिये थे ना ? यौदहवीं बार 'समयसार' चलता है तो यौदह उज्जर देते हैं. यहाँ थे ना ? 'जयपुर'वाले हैं. जोहरी. यौदह बार तो सभा में पूरे शास्त्र का स्पष्टीकरण चला है.

यहाँ औसा कडा कि, आत्मा में जब तक सम्यग्दर्शन-ज्ञान नहीं होता तब तक व्रतादि की क्रिया चारित्र्य को प्राप्त होती नहीं. क्योंकि चारित्र्य का मूल कारण सम्यक् शांति का (कारण), चारित्र्य नाम वीतराग आनंद, वीतराग आनंद का कारण सम्यग्दर्शन-ज्ञान नहीं है तो चारित्र्य होता नहीं. यहाँ चारित्र्य में सम्यग्दर्शन-ज्ञान

કો કારણ કહા. સમ્યગ્દર્શન-જ્ઞાન નિમિત્તકારણ હૈ ઓર ચારિત્ર નૈમિત્તિકકાર્ય હૈ. કઠિન બાત હૈ, ભાઈ ! તત્ત્વ કા અભ્યાસ (કઠિન બહુત હૈ). અનંતકાલ મેં મેરી ચીજ કો લાભ કેસે હો, ઐસી દરકાર સે કભી ક્રિયા હી નહીં. અંધશ્રદ્ધા, અજ્ઞાનપને અનંતકાલ ગંવાયા. સમજ મેં આયા ? ‘છ ઢાલા’ મેં ઇસી મેં પહલે કહા થા ના ? પહલી ઢાલ મેં હી નરક કે દુઃખ કા વર્ણન ક્રિયા હૈ. બહુત નરક કા દુઃખ હૈ. ઓ..હો..હો...!

ભગવાન ! તેરે આત્મા કી અંતરદષ્ટિ કે ભાન બિના તુને અનંત બાર નરક મેં ઇતના દુઃખ સહન ક્રિયા. પહલી ઢાલ મેં આયા હૈ. નરકયોનિ નીચે હૈ. સાત નરક હૈ, નીચે સાત પાતાલ હૈં. સમજ મેં આયા ? હંબગ નહીં હૈ. પ્રત્યેક નરક મેં આત્મદર્શન બિના, સમ્યગ્દર્શન બિના અનંત બાર ઉત્પન્ન હુઆ. આહા..હા...! પહલે આયા કિ નહીં ? ઉસમેં નારકી કે બહુત દષ્ટાંત દિયે હૈં. દેખો ! વહાં ભી કહા થા. (દ્વસરી ગાથા મેં લિખા હૈ).

જે ત્રિભુવન મેં જીવ અનન્ત, સુખ ચાહૈં દુઃખતૈં ભયવન્ત;

તાતૈં દુઃખહારી સુખકાર, કહૈં સીખ ગુરુ કરુણા ધાર. ૨.

દેખો ! અંદર નરક મેં બહુત દષ્ટાંત દિયે હૈં. નરક કા દષ્ટાંત (હૈ), દેખો ! નારકી કો મારતે હૈં. ઉસે શિક્ષા દેતે હૈં. સમજ મેં આયા ? પહલી ઢાલ મેં હૈ. ઇસમેં હૈ. નારકી હૈ ના નારકી ? મારતા હૈ. તીસરા પન્ના, હિન્દી મેં તીસરા પન્ના હૈ. દેખો ! ચાર ગતિ કે ચિત્ર દિયે હૈં. સમજ મેં આયા ? દેખો ! ચાર ગતિ દી હૈં. ઇસ ઓર લકડીવાલા (હૈ વહ) મનુષ્ય હૈ. ઇસ ઓર દેવ હૈ, ઇસ ઓર પશુ હૈ, ઇસ ઓર નારકી હૈ. ચારોં દિયે હૈં. ચાર ગતિ મેં સમ્યગ્દર્શન બિના અનંત બાર ચક્કર ખાયા. સમજ મેં આયા ? સમ્યગ્જ્ઞાન ઓર સમ્યગ્દર્શન પ્રાપ્ત ક્રિયે બિના ચારોં ગતિ મેં (ગયા). સ્વર્ગ ભી અનંત બાર મિલા. પહલી બાર નહીં હૈ. દેખો ! સ્વર્ગ મેં દેવ લિયા હૈ. વહાં દેવ મેં ભી અનંત બાર ગયા. પુણ્ય ક્રિયા, દયા, દાન, વ્રત, ભક્તિ, પૂજા શુભભાવ હૈ, પુણ્ય હોતા હૈ, પુણ્ય હોતા હૈ ઉસસે સ્વર્ગ મિલતા હૈ, જન્મ-મરણ નહીં મિટતે. પાપમેં સે નિકલકર સ્વર્ગ મેં આયા ઇતના હુઆ. ફિર વહાં સે નિકલકર ચાર ગતિ મેં રખડેગા. સમજ મેં આયા ?

આત્મ સમ્યગ્દર્શન કે બિના, અંક બિના શૂન્ય, શૂન્ય કી કીમત હૈ નહીં. ઇસલિયે

યહાં પહલી નરક કા દુઃખ કા બહુત વર્ણન ક્રિયા હૈ. ખાતા હૈ, મારતા હૈ, દેખો ! બહુત દુઃખ બતાયે હૈં. પરાધીન. સિંહ મૃગ કો ખાતા હૈ, દેખો ! બૈલ કો કાટતે હૈં. બહુત દષ્ટાંત દિયે હૈં. સમજ મેં આયા ? નરક મેં આત્મા કે ભાન બિના અનંત બાર ઐસા દુઃખ પાયા.

કહતે હૈં, ‘પ્રશ્ન :- જ્ઞાન-શ્રદ્ધાન તો (યુગપત્) એકસાથ હોતે હૈં, તો ઉનમેં કારણ-કાર્યપના ક્યોં કહતે હો ?’ યહ બાત અપને કલ આ ગયી હૈ.

‘ઉત્તર :- વહ હો તો વહ હોતા હૈ.’ દીપક હો તો પ્રકાશ હોતા હૈ, સમ્યગ્દર્શન હો તો જ્ઞાન હોતા હૈ. ‘ઇસ અપેક્ષા સે કારણ-કાર્યપના કહા હૈ. જિસપ્રકાર દીપક ઔર પ્રકાશ દોનોં યુગપત્ હોતે હૈં તથાપિ દીપક હો તો પ્રકાશ હોતા હૈ ઇસલિયે દીપક કારણ હૈ ઔર પ્રકાશ કાર્ય હૈ. ઇસીપ્રકાર જ્ઞાન-શ્રદ્ધાન ભી હૈં.’ ‘મોક્ષમાર્ગ પ્રકાશક’ ‘દિલ્લી’ સે છપા હૈ ના ?

‘જબ તક સમ્યગ્દર્શન નહીં હોતા તબ તક કા જ્ઞાન સમ્યગ્જ્ઞાન નહીં કહલાતા.’ યાહે સો શાસ્ત્ર પઠ લે, સીખે પરંતુ અંતર અનુભવ દષ્ટિ કરકે આત્મા આનંદમય હૈ, ઐસા અનુભવ, પ્રતીત ન હો તબ તક સબ જ્ઞાન મિથ્યાજ્ઞાન હૈ. સમજ મેં આયા ? અબ જ્ઞાન કી બાત કરતે હૈં. દેખો, તીસરા શ્લોક. ૯૬ પન્ના.

સમ્યગ્જ્ઞાનના ભેદ, પરોક્ષ અને દેશ-પ્રત્યક્ષનાં લક્ષણ  
તાસ ભેદ દો હૈં, પરોક્ષ પરતછ તિન માહીં;  
મતિ-શ્રુત દોય પરોક્ષ, અક્ષ-મનતૈં ઉપજાહીં.  
અવધિજ્ઞાન મનપર્જય દો હૈં દેશ-પ્રતચ્છા;  
દ્રવ્ય-ક્ષેત્ર પરિમાણ લિયે જાને જિય સ્વચ્છા. ૩.

અન્વયાર્થ :- (તાસ) એ સમ્યગ્જ્ઞાનના (પરોક્ષ) પરોક્ષ અને (પરતછ) પ્રત્યક્ષ (દો) બે (ભેદ હૈં) ભેદો છે; (તિન માહીં) તેમાં (મતિ-શ્રુત) મતિજ્ઞાન અને શ્રુતજ્ઞાન (દોય) એ બન્ને (પરોક્ષ) પરોક્ષજ્ઞાન છે. [કારણ કે તે] (અક્ષ-મનતૈં) ઇન્દ્રિયો અને

મનના નિમિત્તથી (ઉપજાડી) ઉત્પન્ન થાય છે. (અવધિજ્ઞાન) અવધિજ્ઞાન અને (મનપર્જય) મન:પર્યયજ્ઞાન (દો) એ બન્ને જ્ઞાન (દેશ-પ્રત્યક્ષ) દેશપ્રત્યક્ષ (હૈં) છે, [કારણ કે તે જ્ઞાનથી] (જિય) જીવ (દ્રવ્ય-ક્ષેત્ર પરિમાણ) દ્રવ્ય અને ક્ષેત્રની મર્યાદા (લિયે) લઈને (સ્વચ્છા) સ્પષ્ટ (જાનૈ) જાણે છે.

ભાવાર્થ :- આ સમ્યગ્જ્ઞાનના બે ભેદ છે - (૧) પ્રત્યક્ષ અને (૨) પરોક્ષ; તેમાં મતિજ્ઞાન અને તજ્ઞાન પરોક્ષજ્ઞાન\* છે, કારણ કે તે બન્ને જ્ઞાન ઇન્દ્રિયો અને મનના નિમિત્તથી વસ્તુને અસ્પષ્ટ જાણે છે. સમ્યગ્મતિ-શ્રુતજ્ઞાન સ્વાનુભવકાળે પ્રત્યક્ષ હોય છે તેમાં ઇન્દ્રિય અને મન નિમિત્ત નથી. અવધિજ્ઞાન અને મન:પર્યયજ્ઞાન દેશપ્રત્યક્ષ\* છે, કારણ કે જીવ આ બે જ્ઞાનથી રૂપી દ્રવ્યને દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાળ અને ભાવની મર્યાદાપૂર્વક સ્પષ્ટ જાણે છે.

‘સમ્યગ્જ્ઞાન કે ભેદ, પરોક્ષ ઔર...’ પ્રત્યક્ષ. આત્મા કા સમ્યગ્દર્શન જો હુઆ ઉસકે સાથ સમ્યગ્જ્ઞાન, જ્ઞાન કે ભેદ (બતાતે હૈં).

તાસ ભેદ દો હૈં, પરોક્ષ પરતછ તિન માહીં;  
મતિ-શ્રુત દોય પરોક્ષ, અક્ષ-મનતૈં ઉપજાહીં.  
અવધિજ્ઞાન મનપર્જય દો હૈં દેશ-પ્રત્યક્ષ;  
દ્રવ્ય-ક્ષેત્ર પરિમાણ લિયે જાનૈ જિય સ્વચ્છા. ૩.

ક્યા કહતે હૈં ? આત્મા મેં આત્મા કી સમ્યક્ દષ્ટિ કા ભાન હોનેપર જો સમ્યગ્જ્ઞાન હોતા હૈ, ધર્મી કો-અંતરદષ્ટિવંત કો-આત્મા કે દર્શનવંત કો. ગૃહસ્થાશ્રમ મેં હો યા ત્યાગી હો, આત્મદર્શન હો (તબ) સાથ મેં જ્ઞાન હોતા હૈ ઉસ જ્ઞાન કે ભેદ કી બાત ભગવાન, આચાર્ય ને જો કહે હૈં, વહ ‘દૌલતરામજી’ કહતે હૈં. અપને ઘર કી બાત નહીં કહતે.

‘ઉસ સમ્યગ્જ્ઞાન કે પરોક્ષ ઔર પ્રત્યક્ષ દો ભેદ હૈં;...’ સમ્યગ્જ્ઞાન કે દો ભેદ.

\* જે જ્ઞાન ઇન્દ્રિયો અને મનના નિમિત્તથી વસ્તુને અસ્પષ્ટ જાણે છે તેને પરોક્ષજ્ઞાન કહેવાય છે.  
x જે જ્ઞાન રૂપી વસ્તુને દ્રવ્ય-ક્ષેત્ર-કાળ અને ભાવની મર્યાદાપૂર્વક સ્પષ્ટ જાણે છે તેને દેશપ્રત્યક્ષ કહે છે.

अेक प्रत्यक्ष, अेक परोक्ष. '(तिन मांडी) मतिज्ञान और श्रुतज्ञान यड दोनों परोक्षज्ञान हैं.' यडां पडली बात व्यवहार से कडी है. आत्मा में मति और श्रुत (ज्ञान) डोता है उसमें इन्द्रिय और मन का निमित्त है. आत्मा का अंदर अनुभव डोता है उसमें निमित्त नहीं है. 'तत्त्वार्थ सूत्र' में और व्यवहार शास्त्र में वेदन की बात नहीं की है. समज में आया ?

आत्मा गृहस्थाश्रम में ली डो, अंतर में आत्मज्ञान हुआ है, आत्मदर्शन हुआ है तो जब आत्मा अपने स्वरूप में ज्ञाता-ज्ञेय-ज्ञान के त्रेड को दूरकर, अंतर अनुभव में डोता है तब अतीन्द्रिय आनंद के वेदन के काल में यड मति-श्रुत (ज्ञान) प्रत्यक्ष डो जाता है. समज में आया ? बाकी के काल में मति-श्रुत पर का ज्ञान करता है वड परोक्ष है. आडा..डा..!

वस्तु चैतन्यसूर्य... इन्द्रिय, मन से प्रत्यक्ष धूल लगता है. यड तो बाहर की वस्तु है. यड जानने में आता है. इन्द्रिय और मन के निमित्त से (पर जानने में आता है). इससे तो वर्ण, गंध, रस, स्पर्श जानने में आता है, उससे आत्मा जानने में आता है ? इन्द्रिय और मन के निमित्त से क्या आत्मा जानने में आता है ? इस आंभ के द्वारा रूप को देखे. क्या आंभ के द्वारा आत्मा को देखता है ? समज में आया कि नहीं ?

अंतर में आत्मा का दर्शन हुआ तो अंतरज्ञान में स्व को पकडकर, शांति के वेदन के काल में सम्यग्दृष्टि को चौथे गुणस्थान, पांचवें गुणस्थान में ली मति-श्रुत का ज्ञान, स्व के अनुभवकाल में स्व की अपेक्षा प्रत्यक्ष डो जाता है. समज में आया ? आंभ बंद करे तो अंधेरा दिजे. वस्तु के तान बिना कैसे दिजाई दे ? कडा था ना ? अेक बर्ये की बात कडी थी ना ? अब दस साल का हुआ है, पडले सात साल का था. 'जामनगर'. मडाराज ! आप कडते डो कि, आत्मा देखो. तो डम आंभ बंद करते हैं तो अंधेरा दिजता है. समजे ? वड लडका अब दस साल का डो गया. बहुत प्रश्न करता था, 'आत्मसिद्धि' का प्रश्न किया था. मडाराज ! 'आत्मसिद्धि' में १८वीं गाथा में ऐसा आता है कि, केवलज्ञानी छत्रस्थ का विनय करे. केवली विनय क्यों करे ? ऐसा प्रश्न किया था. अली दस वर्ष हुआ है, पडले

सात साल का लडका था तब औसा प्रश्न किया था.

महाराज ! आप कहते हो कि, अंदर आत्मा को देखो. आत्मा है. (मैं) आंख बंद करता हूँ तो अंधेरा दिखता है और बाहर देखते हैं तो यह धूल दिखती है. भाई ! सात साल का लडका पूछता था.

मुमुक्षु :- मा-बाप छोरियार है.

उत्तर :- मा-बाप नहीं, उसका याया छोरियार है. मा-बाप साधारण हैं. अब की बार प्रेम हुआ. अबकी बार यार दिन 'जामनगर' रहे ना ? तो सुना. ओ...ओ...! बात कुछ अलग है. उसका दादा वकील है, वह नहीं मानता था. पहली बार व्याख्यान में आया था तब कहता था, आत्मा (है नहीं). फिर (सुना तो कडा), बात कोई और है. लडका उसके याये के साथ पढता था. पढते-पढते उसे यह विचार आये. ओ...ओ...! आत्मा-आत्मा कहते हो कि, आत्मा को देखो. क्या देखे ? आंख बंद करते हैं तो अंधेरा दिखता है, बाहर देखते हैं तो यह दिखता है. हमे क्या देखना ? मैंने कडा, लैया ! सुन ! सुन ! अंधेरा दिखता है, किसमें दिखता है ? क्या अंधेरे में अंधेरा दिखता है ? तुने कभी विचार किया है ? अंधेरा अंधेरे में दिखता है ? या अंधेरा चैतन्यप्रकाश में दिखता है ? चैतन्यप्रकाशमय है उसमें, यह अंधेरा है, मैं अंधेरा नहीं. समज में आया ? लडका बहुत चालाक है. अबकी बार बहुत प्रश्न करता था, बहुत प्रश्न करता था. समकित कैसे प्राप्त हो उसकी बात तो करते नहीं. औसा पूछा था. मैंने कडा, भाई ! वह बात तो बहुत बार आती है, तुजे याद नहीं रहती.

आत्मा वस्तु है, भाई ! अंधेरा दिखता है, वह अंधेरा कौन देखता है ? अंधेरा कौन देखता है ? अंधेरे को अंधेरा देखता है ? ज्ञान. अंदर ज्ञान है, उस ज्ञान की सत्ता की मौजूदगी में अंधेरा दिखता है. अंधेरे की मौजूदगी में अंधेरा नहीं दिखता. ज्ञान की मौजूदगी में अंधेरा दिखता है. ज्ञान की मौजूदगी आत्मा है, अंधेरा पर है. समज में आया ? लेकिन कभी विचार करने का अवसर लिया ही नहीं. अनादिकाल से औसे अंधेरा ही अंधेरा चला है. केवली कैसे विनय करे ? तेरी बात सय है. 'आत्मसिद्धि' की १८ वीं गाथा में लिखा है. औसा कहकर पूछता था. चालाक

लडका है. समझ में आया ? क्या कहते हैं ?

मति-श्रुतज्ञान दोनों परोक्ष है, यहाँ लिखा है. भावार्थ में विभेगे. लेकिन आत्मज्ञान के समय, अनुभव के समय वह ज्ञान प्रत्यक्ष हो जाता है. क्यों ? कि, स्वआश्रय में वेदन है तब प्रत्यक्ष है. पराश्रय में ज्वाल है तो परोक्ष हो गया. प्रत्यक्ष और परोक्ष, कहां माथापच्ची करनी ? संसार की माथापच्ची हो तो सब करे. पांच-पचास प्राप्त करने को कितनी मेहनत करता है ? देश (छोडकर) परदेश जाये, मेहनत करे, मजदूरी करे.

मुमुक्षु :- इन्द्रियनुं ज्ञान प्रत्यक्ष थाय.

उत्तर :- धूल में ली होता नहीं. आत्मा का ज्ञान अपने से होता है, उसका नाम प्रत्यक्ष. इन्द्रिय और मन से पर का ज्ञान करे वह तो परोक्ष है. इस आंख से रूप देखा तो रूप प्रत्यक्ष है ? वह तो परवस्तु है. यह शब्द परवस्तु है. देओ ! आत्मा का अंदर ज्ञान कर के...

मुमुक्षु :- रूपये बेंक में रभे हो उसमें गलती होवे ?

उत्तर :- ज्ञान में ज्वाल है कि, पांच हजार रभे हैं. बस ! इतना ज्वाल (है). इस ज्वाल में लूल नहीं. यीज रडे या नहीं, उसके अधिकार की बात है ? वे औसा कडना याडते हैं कि, (पैसे) प्रत्यक्ष है ना ? प्रत्यक्ष कहां है ? प्रत्यक्ष तो उस ज्ञान को कहते हैं, जिसमें पर का आश्रय नहीं हो. प्रत्यक्ष ज्ञान इसे कहते हैं कि, जिसमें पर का आश्रय हो नहीं. पर का ज्ञान करता है उसमें तो इन्द्रिय का आश्रय है. प्रत्यक्ष कहांसे आया ? वह कहते हैं, देओ ! नीचे स्पष्टीकरण आयेगा.

‘अविज्ञान और मनःपर्ययज्ञान यह दोनों देशप्रत्यक्ष हैं; (क्योंकि उन ज्ञानोंसे) श्रव द्रव्य और क्षेत्र की मर्यादा लेकर स्पष्ट जानता है.’

भावार्थ :- ‘इस सम्यग्ज्ञान के दो भेद हैं - (१) प्रत्यक्ष और (२) परोक्ष. उनमें मतिज्ञान और श्रुतज्ञान परोक्षज्ञान हैं.’ नीचे स्पष्टीकरण है. ‘जो ज्ञान इन्द्रियों तथा मन के निमित्त से वस्तु को अस्पष्ट जानता है...’ अस्पष्ट जानता है इसलिये परोक्षज्ञान कहते हैं.

‘सम्यक्प्रमत्तिश्रुतज्ञान स्वानुभवकाल में प्रत्यक्ष होते हैं, उसमें इन्द्रिय और मन निमित्त नहीं हैं.’ देखो ! इसमें से लिखा है. कोई कहते हैं, उसमें नहीं था. लेकिन उसमें है. निश्चयभाव उसमें है. यह व्यवहार से बात कही है. निश्चय से तो आठ वर्ष की बालिका हो, आठ वर्ष की लड़की, उसे सम्यग्दर्शन और धर्म की पड़ली दृशा प्रगट हो तो उसे भी अंतर में ध्यानकाल में अपने आत्मा का ज्ञान, आनंद का वेदन, राग और निमित्त की अपेक्षा बिना होता है, उसका नाम सम्यग्ज्ञान स्व की अपेक्षा से कहने में आता है. कठिन बात (है). समज में आया ?

‘सम्यक्प्रमत्तिश्रुतज्ञान स्वानुभवकाल में...’ स्वानुभव यानी आत्मा के आनंद के अनुभव के काल में. समज में आया ? गृहस्थाश्रम में हो, राजपाट आदि हो लेकिन अंतर सम्यग्दर्शन, आत्मा का भान हुआ है. जब ध्यान में बैठते हैं तो अंतर के अनुभव में सब भूल जाते हैं. रागादि भूल जाते हैं, शरीरादि सब भूल जाते हैं. अंतर आत्मा में ज्ञान अकाग्र हो जाता है. उसमें आत्मा के अनुभव में अतीन्द्रिय आत्मा का आनंद का वेदन आना, वह ज्ञान प्रत्यक्ष है. सम्यग्दृष्टि पशु को भी एतना ज्ञान प्रत्यक्ष होता है. भगवान के समय में समवसरण में पशु भी आते थे कि नहीं ? समवसरण में है या नहीं ? देखो ना ! हाथी, वाघ, नाग सब भगवान के समवसरण में आते थे. सुना है या नहीं ? असंख्य पशु अती सम्यग्ज्ञानी हैं. अठारह द्वीप बहार स्वयंभूरमण समुद्र है ना ? स्वयंभूरमण समुद्र में असंख्य पशु श्रावक हैं. भगवान सर्वज्ञ परमेश्वर त्रिलोकनाथ ने कहा है. असंख्य पशु हैं. यहां तो मनुष्य को भान नहीं होता है, वह तो पशु हैं. वह पूर्व का भान करके अंदर आ जाता है. सम्यग्ज्ञानी है. समज में आया ? उजार-उजार जोजन का मच्छ. यार उजार गाँव का लंबा शरीर. स्वयंभूरमण समुद्र आभीर का है ना ? असंख्य द्वीप-समुद्र हैं उसमें आभीर का समुद्र है. उसमें असंख्य पशु, मगरमच्छ, मच्छी सम्यग्दृष्टि है, आत्मज्ञानी है. वह भी अंतर में ध्यान करके आत्मा का ज्ञान अनुभव में प्रत्यक्ष कर लेते हैं. समज में आया ?

ज्ञान की अपनी पर्याय की ताकत कितनी है इसकी उसे जबर नहीं. समज में आया ? दूसरा ज्ञान उसे कहां है ? मछली को व्यापार-धंधे का ज्ञान होता है ?

मेंढक को सम्यग्ज्ञान होता है. कौआ को, बंदर को, छाथी को (होता है). असंभ्य हैं, असंभ्य समुद्र हैं. भगवान ने ज्ञान में—केवलज्ञान में सब देखा है. समज में आया ? आत्मा दे देते हैं, औसा नहीं. हम तो अंतर में आनंदमूर्ति आत्मा है वही मैं आत्मा हूँ. रागादि, विकल्प उठते हैं वह मैं नहीं. औसा भान पशु में भी है. छाथी है ना ? त्रिलोकमंडन छाथी. 'रावण' का छाथी था ना ? यौरासी लाभ छाथी थे, उसका अग्र था. त्रिलोकमंडन छाथी. जब 'रामचंद्रण', 'लक्ष्मणण' ने लंका पर विजय प्राप्त की तो छाथी को 'अयोध्या' घर ले आये. छाथी को 'अयोध्या' लाये हैं. देओ छाथी !

यहां 'राम', 'लक्ष्मण', 'शत्रुघ्न' और 'भरत' यारों दर्शन के लिये जाते हैं. देओ यार. आभुषण पहने हैं. 'भरत' को वैराग्य हुआ. 'रामचंद्रण' का भाई. अंदर शांति वीतरागता हुई. छाथी को भान हुआ. अरे..! मैं तो उसका मित्र था. 'भरत' और मैं दोनों मित्र थे. ये 'भरत' राजकुमार हुआ, मैंने माया की तो छाथी हुआ. छाथी को जातिस्मरण हुआ. आडा..डा...! है ? देओ ! आभुषण निकाल दिये. सब निकालकर अकेले (अडे हैं). हमारा आत्मा पूर्व में 'भरत' के साथ मित्र था. अरे...! आत्मा क्या किया ? मैं पशु हो गया. औसा आत्मज्ञान हुआ, जिसमें जातिस्मरण (हुआ). वैराग्य.. वैराग्य. आभिर में समाधिभरण करके स्वर्ग में गया.

'त्रिलोकमंडन' छाथी पहले 'रावण' का (था), वह मधुवनमें से मिला था. मधुवन है ना ? उसमें से शोध करके छाथी मिला था. बडा जंगली छाथी. वह भी वैराग्य पाकर सम्यग्दर्शन प्राप्त करता है. पंद्रह-पंद्रह दिन के बाद भोजन लेता है. किसी की दरकार नहीं. समज में आया ? पशु भी आत्मज्ञान और आत्मदर्शन करते हैं. आत्मा है कि नहीं ? पशु का शरीर तो भिन्न है, शरीर से क्या है ? यह तो मिट्टी है. औसा अनुभव मति-श्रुतज्ञानी सम्यग्दृष्टि गृहस्थाश्रम में भी प्रत्यक्ष आत्मा का अनुभव करते हैं. उस समय मति-श्रुत को प्रत्यक्ष कलने में आता है.

'अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान यह दोनों देशप्रत्यक्ष हैं;...' थोडा जानता है. द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव जाने, मर्यादापूर्वक जानता है. अब यौथी गाथा देओ. अपने यौथी गाथा आयी.

સકલપ્રત્યક્ષ જ્ઞાનનું લક્ષણ અને જ્ઞાનનો મહિમા

સકલ દ્રવ્યકે ગુન અનંત, પરજાય અનંતા;  
જાને એકે કાલ, પ્રગટ કેવલિ ભગવન્તા.  
જ્ઞાન સમાન ન આન જગતમેં સુખકો કારન;  
ઈહ પરમામૃત જન્મજરામૃતિરોગ નિવારન. ૪.

અન્વયાર્થ :- [જે જ્ઞાનથી] કેવલિ ભગવંતા) કેવળજ્ઞાની ભગવાન (સકલ દ્રવ્યકે) છએ દ્રવ્યોના (અનંત) અંપરિમિત (ગુન) ગુણોને અને (અનંતા) અનંત (પરજાય) પર્યાયોને (એકે કાલ) એક સાથે (પ્રગટ) સ્પષ્ટ (જાને) જાણે છે [તે જ્ઞાનને] (સકલ) સકલપ્રત્યક્ષ અથવા કેવળજ્ઞાન કહે છે. (જગતમેં) આ જગતમાં (જ્ઞાન સમાન) સમ્યગ્જ્ઞાનના જેવો (આન) બીજો કોઈ પદાર્થ (સુખકો) સુખનું (ન કારણ) કારણ નથી. (ઈહ) આ સમ્યગ્જ્ઞાન જ (જન્મ-જરામૃતિરોગ) જન્મ-જરા અને મરણના રોગોને (નિવારન) દૂર કરવાને માટે (પરમામૃત) ઉત્કૃષ્ટ અમૃત સમાન છે.

ભાવાર્થ :- ૧. જે જ્ઞાન ત્રણકાળ અને ત્રણલોકવર્તી સર્વ પદાર્થોને (અનંતધર્માત્મક સર્વ દ્રવ્ય-ગુણ-પર્યાયોને) પ્રત્યેક સમયમાં યથાસ્થિત, પરિપૂર્ણરૂપથી સ્પષ્ટ અને એકસાથે જાણે છે તે જ્ઞાનને કેવળજ્ઞાન કહે છે. જે સકલપ્રત્યક્ષ છે.

૨. દ્રવ્ય, ગુણ અને પર્યાયોને કેવળી ભગવાન જાણે છે પણ તેના અપેક્ષિત ધર્મોને જાણી શકતા નથી-એવું માનવું તે અસત્ય છે. વળી તે અનંતને અથવા માત્ર પોતાના આત્માને જ જાણે છે, પરંતુ સર્વને ન જાણે-એવું માનવું તે પણ ન્યાયવિરુદ્ધ છે. કેવળી ભગવાન સર્વજ્ઞ હોવાથી અનેકાન્તસ્વરૂપ પ્રત્યેક વસ્તુને પ્રત્યક્ષ જાણે છે. (લઘુ જૈ. સિ. પ્ર. પ્રશ્ન ૮૭)

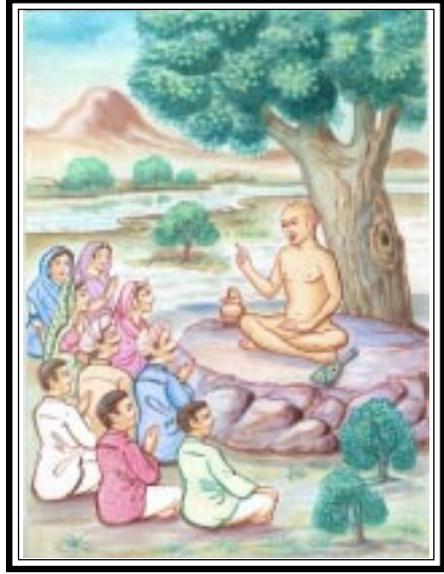
૩. આ સંસારમાં સમ્યગ્જ્ઞાન જેવી સુખદાયક અન્ય કોઈ વસ્તુ નથી. આ સમ્યગ્જ્ઞાન જ જન્મ-જરા અને મૃત્યુરૂપી ત્રણ રોગોનો નાશ કરવા માટે ઉત્તમ અમૃત સમાન છે.

‘सकल प्रत्यक्ष ज्ञान का लक्षण और ज्ञान की महिमा’ देखो !

सकल द्रव्यके गुन अनंत, परजाय अनंता;  
 जानै ओकै काल, प्रगट केवलि भगवन्ता.  
 ज्ञान समान न आन जगतमें सुभको कारन;  
 एउ परमामृत जन्मजरामृतिरोग निवारन. ४.

देखो ! जन्म-मरण, रोग के निवारण में आत्मज्ञान, ज्ञानस्वरूप एक कारण है. देखो ! एतना वजन दिया है. वजन देते हैं, क्या कड़ते हैं ? वजन कड़ते हैं ? जोर देते हैं. समझ में आया ? देखो, नीचे.

अन्वयार्थ :- ‘(जिस ज्ञानसे) केवलज्ञानी भगवान...’ केवली परमात्मा को केवलज्ञान होता है. पहले सम्यग्दर्शन हुआ था, बाद में सम्यग्ज्ञान हुआ, और सम्यग्ज्ञान में आगे बढ़कर केवलज्ञान हुआ. ये केवलज्ञान ज्ञान की पांचवीं सम्यक् पर्याय है. यह पर्याय सम्यक्ज्ञान है. मति-श्रुत भी सम्यग्ज्ञान है, अवधि, मनःपर्याय भी सम्यग्ज्ञान है. अवधि से रूपी देखते हैं, मनःपर्याय से दूसरे के मन के भाव को देखते हैं. केवली तो तीनकाल को देखते हैं. इसी अरिहंताओं. ये अरिहंत भगवान केवलज्ञानी हैं और सिद्ध भगवान केवलज्ञानी हैं.



अरिहंत भगवान महाविदेहक्षेत्र में बिराजते हैं. ‘सीमंधर’ परमात्मा जो यहाँ भगवान को स्थापित किये हैं वे परमात्मा बिराजते हैं. महाविदेह क्षेत्र में अभी अरिहंत हैं. वे भी केवलज्ञानी हैं. तीनकाल, तीनलोक को जानते हैं. सिद्ध भगवान हुआ. चौबीस तीर्थंकर हैं वे सिद्ध हो गये. उनको अभी शरीर नहीं है, अशरीरी हो गये. उपर लोकाग्रे बिराजते हैं. दोनों को केवलज्ञान है. कैसा केवलज्ञान है ?

‘(सकल द्रव्य के) छोड़ो द्रव्यों के...’ हेजो ! केवलज्ञानी भगवान ने सब द्रव्य यानी भगवान ने छोड़ द्रव्य हेजे हैं. उनके अपरिमित गुण हेजे हैं. अनंत गुण ! और अनंती पर्याय. भगवान के ज्ञान में तीनकाल तीनलोक सब प्रत्यक्ष दिजने में आया. यह केवलज्ञान कैसे उत्पन्न होता है ? आत्मा का सम्यग्दर्शन और ज्ञान का अनुभव करते-करते उत्पन्न होता है, ऐसा कहते हैं. समज में आया ? हेजो है ना ?

‘अक साथ (प्रगत) स्पष्ट जानते हैं...’ ‘प्रगत’ शब्द पडा है ना ? आत्मा में ज्ञान की एतनी ताकत है कि, एस ज्ञान का अनुभव हुआ, सम्यग्दर्शन-ज्ञान (हुआ), बाद में स्वरूप में स्थिरता-चारित्र अंदर में अकाग्रता (करते हैं तो) केवलज्ञान हो गया. अक सेकंड के असंख्य वे भाग में तीनकाल तीनलोक भगवान हेजते हैं. समज में आया ? सकलप्रत्यक्ष प्रगत केवलज्ञान है.

‘एस जगत में सम्यग्ज्ञान जैसा दूसरा कोई पदार्थ सुभ का कारण नहीं है.’ हेजो ! समज में आया ? पुण्य-पाप का भाव है वह सुभ का कारण नहीं है, ऐसा उसमें आया. आ..छा...! क्या कहते हैं ? हेजो ! ये तो ‘दौलतरामज्ज’ गृहस्थाश्रम में रहे भगवान के ज्ञान का जो बोध हुआ उसे कहते हैं. ‘एस जगत में सम्यग्ज्ञान जैसा...’ अपने शुद्ध स्वरूप का - आत्मा का ज्ञान, दूसरा (ज्ञान) नहीं, शास्त्रज्ञान हो, ना हो, पर के ज्ञान के साथ संबंध नहीं. अपने आत्मा का अंतरज्ञान हुआ उसके समान, ‘सम्यग्ज्ञान जैसा दूसरा कोई पदार्थ सुभ का कारण नहीं है.’ आत्मा में सम्यग्ज्ञान ही समाधान और सुभ का कारण है, ऐसा कहते हैं. स्त्री, कुटुंब, पैसा सुभ का कारण नहीं है, ऐसा कहते हैं.

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- धूल में भी सुभ नहीं है.

आत्मा ज्ञान अंतर में सम्यक् हुआ, उसके अलावा कोई सुभ का कारण जगत में है नहीं, ऐसा भगवान त्रिलोकनाथ परमेश्वर परमात्मा कहते हैं. कछो, भाई ! अच्छे पुत्र हो तो सुभ का कारण है या नहीं ? नहीं ? आत्मा को पुत्र ही नहीं है. आत्मा का पुत्र क्या है ? उसने जन्म दिया है ? उसका आत्मा भिन्न है, उसका

शरीर का रजकण त्मिन्न है, शरीर जड है. क्या आत्मा ने उसे उत्पन्न किया है ? आत्मा उत्पन्न करे-अज्ञान और राग-द्वेष. अथवा उत्पन्न करे-ज्ञान और आनंद. समज में आया ?

यहां कड़ते हैं.. आ..डा...! ओक आत्मा पर से निरावा (है), औसा ज्ञान हुआ तो एस ज्ञान के समान जगत में सुभ का कारण कोई है नहीं. आनंद की उत्पत्ति का कारण यड ज्ञान है. दुनिया में भी जितनी समज है उतना उसे समाधान रडता है या नहीं ? वड तो संसार है, यड तो आत्मा की बात है. ओ..डो...! (एनका) शरीर भी मोटा है, पैसा भी बहुत है, लवे डी लडके के पास है, लेकिन संतोष तो डोता है ना ? किसका लडका ? (एनका). सूठन है, सूठन. शरीर में सूठन नहीं आती है ? सूठन आती है तो दुःख डोता है. और सूठन अंदर में जाये तो... शरीर में सूठन डोती है ना ?

आत्मा में शांति है. धूल में-पैसे में (नहीं है). पुण्य-पाप का नया भाव करता है ना ? वड भी विकार है, उसमें शांति-सुभ नहीं है, औसा कड़ते हैं. आडा..डा...! पूर्व के पुण्य के फल में तो सुभ नहीं है, लेकिन वर्तमान नया पुण्य उत्पन्न करे, कषाय मंद (करे), दया, दान, भक्ति शुभराग है उसमें भी सुभ नहीं, औसा यहां तो कड़ते हैं. आडा..डा...! कैसे डोगा ? भाई ! शरीर में रोग आता है उसके लिये नहीं.

यहां तो कड़ते हैं कि, भगवानआत्मा में अंदर दल चैतन्यशांति पडी है, उसका जो ज्ञान है उसके समान कोई सुभ का कारण नहीं. तीनकाल में कोई सुभ का कारण नहीं. एन्द्र का अवतार या यकवर्ती का भव, सुभ का कारण नहीं है. समज में आया ? आ..डा...! क्या कड़ते हैं ? देओ ना ! 'दूसरा कोई पदार्थ सुभ का कारण नहीं है.'

'यड सम्यग्ज्ञान डी (जन्म-जरा-मृति रोग...)' देओ ! 'जन्म, जरा...' नाम 'वृद्धावस्था) और मृत्युरूपी रोगों को दूर करने के लिये...' औसा कडा. मृत्युरोग औसा कडा. 'दूर करने के लिये (परमामृत)...' परमामृत 'उत्कृष्ट अमृत समान है.' आत्मा अंतर में ज्ञान डोना यड जन्म-जरा-मरण का नाश डोने का मडान उपाय है. आडा..डा...! शास्त्र की पढाई भी नहीं, दुनिया का ज्ञान भी नहीं. सब दुःख का

કારણ છે. કહો, બરાબર હોગા યહ ?

કહતે હૈં.. આ..હા...! ‘(પરમામૃત)...’ ઐસા શબ્દ પાઠ મેં લિયા છે. ‘દૌલતરામજી’ પંડિત. પરમામૃત. ભગવાનઆત્મા અંતર અનાકુલ આનંદસ્વરૂપ (હૈ), ઉસકા જ્ઞાન પરમઅમૃત છે કિ, જિસ જ્ઞાન સે જન્મ, જરા, મૃત્યુ કા રોગ નાશ કા યહ જ્ઞાન ઉપાય છે, દૂસરા કોઈ ઉપાય નહીં. સમજ મેં આયા ? આત્મજ્ઞાન-આત્મા કા જ્ઞાન જન્મ, જરા, મરણ કા નાશ કરનેવાલા છે, ઐસા કહતે હૈં. જિસને અંતર આત્મા કી કીમત કી, ઓ..હો...! મેં તો પરમસ્વરૂપ પરમાત્મા હૂં. જૈસે સિદ્ધ ભગવાન (હૈં), ‘સિદ્ધ સમાન સદા પદ મેરો’ આતા હૈ ના ? ‘બનારસીદાસ’ મેં આતા હૈ. ‘ચેતન રૂપ અનૂપ અમૂરત, સિદ્ધ સમાન સદા પદ મેરો, ચેતનરૂપ અનૂપ અમૂરત, સિદ્ધ સમાન સદા પદ મેરો, મોહ મહાતમ આતમ અંગ, કિયો પરસંગ મહાતમ ઘેરો’ અરે...! મેં સિદ્ધ સમાન આત્મા (હૂં). મેંને હી રાગ ઔર વિકલ્પ કે સાથ એકત્વ કરકે દુઃખ કો ઉત્પન્ન કિયા. ‘જ્ઞાનકલા અબ ઊપજી મોકો, જ્ઞાનકલા ઊપજી અબ...’ દેખો ! ‘બનારસીદાસ’ ગૃહસ્થાશ્રમ મેં રહતે થે. પહલે શૃંગારી થે, મહાભોગી, વ્યભિચારી (થે). બાદ મેં આત્મધર્મ પાયા, સબ પલટ ગયા. સમજ મેં આયા ? ‘જ્ઞાનકલા ઊપજી અબ મોકૂ, કહૂં ગુણ નાટક આગમ કેરો, યાહી પરસાદ સધૈ શિવમારગ, વેગે મિટે ઘટવાસ વસેરો.’ ઇસ ઘટ મેં-મિટ્ટી મેં બસના, વહ સમ્યગ્જ્ઞાન દ્વારા બસના છૂટ જાયેગા. અબ ઇસમેં રહુંગે નહીં. આહા..હા...! સમજ મેં આયા ?

‘ચેતનરૂપ અનૂપ અમૂરત, સિદ્ધ સમાન સદા પદ મેરો..’ મેં તો સિદ્ધ સમાન આત્મા હૂં, ઐસા સમ્યગ્દષ્ટિ પહલે સે હી માનતે હૈં. ‘જ્ઞાનકલા ઊપજી અબ મોકૂ’ મેં જ્ઞાનસ્વરૂપ હૂં. મેં રાગ નહીં, પુણ્ય નહીં, શરીર નહીં. ‘કહૂં ગુણ નાટક આતમ કેરો’ મેં સમયસાર નાટક કા વર્ણ કરુંગા. ‘તાસ પ્રસાદ’ સમ્યગ્જ્ઞાન કા પ્રસાદ. ‘સધૈ શિવમારગ’ મોક્ષ કા માર્ગ. ‘વેગે મિટે ઘટવાસ વસેરો’ ઇસ માંસ મેં રહના, હડી મેં રહના, હમારે સમ્યગ્જ્ઞાન દ્વારા ઇસ ઘટ મેં બસના બંદ હો જાયેગા. સમજ મેં આયા ? આહા..હા...! સમજે ?

મૃતિ, ઉસમેં મૃત્યુ કહા હૈ ના ? જન્મ, જરા, મૃતિ શબ્દ ઇસમેં લિખા હૈ. દૂસરે મેં મૃત્યુ શબ્દ હૈ. ઐસા ક્યો કિયા ? ભાષા તો હિન્દી હૈ ના ? હિન્દી મેં ક્યો

(ક્રિયા) ? મૃતિ હોના ચાહિયે ના ? યહ ભાષા તો હિન્દી હૈ ના ? જન્મ, જરા ઓર મૃત્યુ ઐસા જો રોગ, વહ આત્મજ્ઞાન કે દ્વારા (મિટતા હૈ). ક્વોંકિ આત્મજ્ઞાન પરમઅમૃત હૈ. અંતર સ્વરૂપ કા ભાન અમૃત હૈ ઉસસે સબ જન્મ, જરા, મરણ કા રોગ નાશ હોતા હૈ. ઇસકે અલાવા દૂસરા કોઈ ઉપાય હૈ નહીં. વિશેષ કર્હેંગે...

(શ્રોતા :- પ્રમાણ વચન ગુરુદેવ !)

